कल्याणमित्र श्री गोयन्काजी एवं श्रीमती इलायचीदेवी

पूज्य गुरुजी एवं माताजी

के बारे में

साधकों के संस्मरण

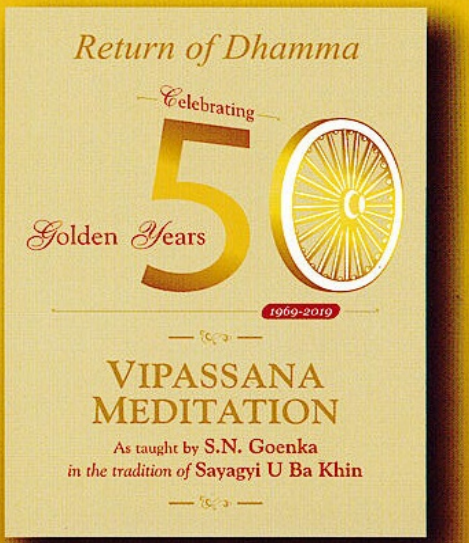

विपश्यना विशोधन विन्यास

कल्याणमित्र श्री गोयन्काजी एवं श्रीमती इलायचीदेवी

पूज्य गुरुजी एवं माताजी के बारे में साधकों के संस्मरण

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

पूज्य गुरुजी एवं माताजी के बारे में साधकों के संस्मरण

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय 7

पूज्य गुरुदेव की पुण्यतिथि 9

इलायचीदेवी सत्यनारायण गोयन्का, मुंबई 10

मेरे व्यक्तिगत अनुभव 11

– रामप्रताप रामदेव यादव, इगतपुरी 11

अंत तक सतत कर्मशील गुरुदेव 19

– रामेश्वरलाल शर्मा, जयपुर 19

आपका कृतज्ञ हूं 22

– दारयूश नोज़ोहूर, इगतपुरी 22

मेरे परमादरणीय धम्माचार्य गोयन्काजी 25

– गेयर एवं रिक क्रचर, धम्मकुंज, अमेरिका 25

जन्मभूमि धर्मभूमि बनी 27

– इला अग्रवाल, मुंबई 27

पूज्य गुरुजी से जुड़ी कुछ यादें 33

– कर्क एवं रीनेट ब्राउन, यू. के. 33

सर्वमान्य विपश्यना पथ पर मेरी अभूतपूर्व यात्रा 40

– खालिद के. खान, पाकिस्तान 40

बहुमुखी प्रतिभासंपन्न श्री गोयन्काजी 45

– सावित्री व्यास, अहमदाबाद 45

स्वयं गंगा जब प्यासों की प्यास बुझाने गयी 58

– प्रो. अंगराज चौधरी, इगतपुरी 58

ममतामयी माताजी का मातृ-हृदय 64

– प्रो. अंगराज चौधरी, इगतपुरी 64

धर्म की छाया में चालीस वर्ष 67

– नानीमैयाँ मानन्धर, नेपाल 67

गुरुजी की विनम्रता और सज्जनता 76

– प्रोफेसर अंगराज चौधरी इगतपुरी 76

पूज्य गुरुजी के साथ दो प्रेरणादायक घटनाएं..... 84
– भरत कुमार राठोड़, गांधीनगर..... 84
धर्म में पकें 88
– विरल डी जानी, राजकोट, गुजरात 88
विपश्यना के मेरे अनुभव..... 90
– डॉ ओम दत्त त्रिपाठी, कानपुर 90
प्रबल मैत्री का प्रभाव 94
– देवाजी डोमाजी मोडक, नागपुर..... 94
"मैं स्वामीजी नहीं हूं"..... 97
– डॉ. कुमार, हैदराबाद..... 97
मृत्यु से सामना,..... 101
– दीपक कराडे (स. आचार्य), नागपुर..... 101
पूज्य गुरुजी के दो शब्द..... 104
– कमला-काश्यप धर्मदर्शी के लिए- 104
पूज्य गुरुदेव के साथ धम्मसेवा का अनुभव 107
– माया बाविस्कर, नागपुर 107
पूज्य गुरुजी के साथ सुखद अनुभूति..... 109
– मंगला मधुकर चौधरी, नासिक 109
धम्मसेवा का सत्फल 110
– संतोष जांभुलकर, नागपुर..... 110
पूज्य गुरुजी के प्रति कृतज्ञताज्ञापन में मेरा अनुभव..... 113
– काशी प्रसाद मोदी, अहमदाबाद 113
गुरुजी के बारे में मेरी यादें..... 114
– मोहनी देवी सरावगी, चेन्नई..... 114
दादा गुरु का स्वप्न पूरा किया..... 115
– श्रीमती पुष्पा माखरिया..... 115
धर्म का प्रसार करो..... 116
– श्रीमती बीना मेहरोत्रा 116
पूज्य गुरुजी एवं माताजी के संस्मरण 122
– के. मंजप्पा, इगतपुरी..... 122

प्रकाशकीय

इस पुस्तक में उन साधक-साधिकाओं तथा गुरुजी एवं माताजी के साथ काम करने वाले लोगों के अनुभव तथा उनसे विपश्यना सीख कर जो लाभ पाया, उनका वर्णन है। किसी साधक को विपश्यना में अपनी समस्या का समाधान मिला तो किसी ने गुरुजी में अचल-अकंपित शक्ति देखी और किसी ने विपरीत परिस्थितियों में अनुद्वेलित रह कर हँसते-हँसते कष्टों को सहने की शक्ति देखी। यहां तक कि उन पर क्रोध करने वाले साधक पर गुरुजी ने मेत्ता बरसायी और उसका जीवन ही बदल गया। किसी को उनके प्रवचनों से पालि शब्दों के गंभीर अर्थ को समझना आ गया और यह भी समझ में आ गया कि शब्दों की शक्ति सीमित है। कुछ अनुभव ऐसे हैं जिनका शब्दों में वर्णन करना कठिन है। यह प्रज्ञा अर्थात प्रत्यक्ष ज्ञान से ही संभव है। प्रत्यक्ष ज्ञान अर्थात भावनामयी प्रज्ञा जो विश्व संस्कृति को भगवान बुद्ध की अनुपम देन है। प्रत्यक्ष ज्ञान क्या होता है यह जान कर उसे अंतर्मुखी होना भी आ गया।

किसी ने विपश्यना का अभ्यास करके तथा बुद्ध के उपदेशों को सुन कर बूढ़े माता-पिता की सेवा करना अपना धर्म बना लिया। किसी को ऐसा लगा कि उसने अनमोल धर्मरत्न प्राप्त कर लिया है तो किसी को ऐसी अनुभूति हुई कि अपना भाग्य विधाता वह स्वयं है और इस विद्या के अभ्यास से उसने अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लिया है।

एक मुस्लिम साधक अपने विकारों को देखना सीख कर शारीरिक रोग से तो मुक्त हुआ ही, उसने अनुभव किया कि उसके अपने धर्म और विपश्यना में कोई मतभेद नहीं है। यह शील में प्रतिष्ठित होना तथा संसार की सच्चाइयों को प्रत्यक्ष जान कर अनासक्त होना सिखाती है। केवल कहती ही नहीं, बल्कि इसका अभ्यास कराती है।

किसी साधिका को पाखंडी गुरु और सच्चे गुरु का भेद समझ में आ गया, जब उसकी भेंट गोयन्काजी से हुई। उसने सच्चे गुरु के करुणचित्त और मैत्रीचित्त से निकली यह बात सुन कर कि --- साधक तेरा मंगल होवे ..., बेटी तेरा मंगल होवे ..., अन्याय और अपमान से उसके जीवन में उत्पन्न विषमयी स्थिति को न

केवल दूर किया बल्कि दुःख की कठोर शिला को भी तोड़ डाला। इस साधिका ने ऐसी बातों का उल्लेख भी किया है जिनसे स्पष्ट हो जाता है कि गुरुजी में अपरिमित समताभाव था।

इस पुस्तक में एक नेपाली साधिका ने यह वर्णन किया है कि उसने श्री गोयन्काजी से साधना सीख कर अपनी दिशा और दशा ही बदल डाली। एक और लेख से यह भी स्पष्ट होता है कि वे कितने विनम्र और सज्जन थे। विद्वानों से काम लेते समय शीघ्रता से काम करने को अवश्य कहते, लेकिन काम की गुणवत्ता से समझौता करने के लिए नहीं कहते थे। इसी लेख में गुरुजी ने पालि तथा हिंदी को कैसे समृद्ध किया, यह भी दरसाया गया है।

एक लेख में यह वर्णन है कि एक साधक ने अच्छा व्यवहार नहीं किया, पर गुरुजी ने कितने शांतचित्त और करुणचित्त से उससे कहा कि कीचड़ में ही गिरे रहना चाहते हो, ऊपर नहीं उठना चाहते? साधक ने जब यह बात सुनी तो उसे अनुभव हुआ कि वह गुरुजी के प्यार और करुणा की धारा में भींग गया है।

कुछ लेखों में मेत्ता का प्रभाव स्वानुभव से दिखाया गया है और एक लेख में स्पष्ट कहा गया है कि विपश्यना का उद्देश्य वहां तक पहुँचना है जहां पहुँच कर आगे जाना नहीं होता। कुछ लेखों में यह भी वर्णित है कि विपश्यना के प्रचार-प्रसार में कितनी कठिनाइयां आयीं और पूज्य गुरुजी ने कैसे उनका सामना किया।

भारत में विपश्यना के आगमन के 50वें वर्ष के इस स्वर्णिम अवसर पर पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायण गोयन्का एवं पूज्य माताजी श्रीमती इलायची देवी गोयन्का को याद करते हुए प्रेरक प्रसंगों से भरी यह पुस्तक विपश्यना विशोधन विन्यास की एक अनमोल देन है। इस पुस्तक के पढ़ने वाले साधकों एवं पाठकों को इससे प्रभूत प्रेरणा मिले, यही मंगल कामना है।

न्यासीगण,
विपश्यना विशोधन विन्यास